शिरीष के फूल

लेखक: हजारी प्रसाद द्विवेदी

पाठ का सार:-जहाँ लेखक बैठकर लेख लिख रहे हैं,वहाँ आसपास अनेक शिरीष के वृक्ष हैं।जेठ के महीने में पृथ्वी अग्निकाँड बनी है, परंतु शिरीष का वृक्ष फूलों से लदा है। शिरीष के फूल बसंत के आगमन के साथ खिलते हैं और आषाढ़,भादों के महीने तक इस वृक्ष पर फूल रहते हैं। शिरीषकालजयी अवधूत की तरह जीवन की अजेयता का संदेश देता है। शिरीष के वृक्ष बड़े और छायादार होते हैं। पुराने समय के रईस अपनी वृक्ष वाटिका की चारदीवारी के पास शिरीष के वृक्षलगाते थे।

संस्कृत साहित्य में शिरीष के फूलों को बहुत कोमल कहा गया है,परन्तु वास्तविकता यह है ये पूरा वृक्ष कोमल नहीं है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के आने के बाद भी अपने स्थान को नहीं छोड़ते। नए फूल-पत्तेइन्हेंधकेल कर हटाते हैं, तब ये अपना स्थान छोड़ते हैं। शिरीष के पुरानेफलों को देखकर उन नेताओं की याद आती है, जो जमाने का रुख नहीं समझते। नई पीढ़ी के लोग इन्हें धक्का मारकर निकालते हैं, तभी ये पद छोड़ते हैं।

जरा और मृत्यु दो अटल सत्य हैं। महाकाल देवता सप-सप कोड़े चला रहे हैं। जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष चल रहा है। मूर्ख समझते हैं जहाँहैंवहीं बने रहो, तो काल देवता की आँख से बच जाओगे। परंतु सत्य यह है हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो काल देवता के कोड़ों से बच जाओगे। जमे कि मरे।

शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। जब सारी धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी शिरीष कहाँ से रस खींचता है, जो फलता फूलता है? वनस्पतिशास्त्री का कहना है कि शिरीष वायुमंडल से अपना रस खींचता है, इसीलिए भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतु और सुकुमार केसर उगाता है। शिरीष जैसे अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत कुछ शिरीष की तरह थे- मस्त, बेपरवाह, सरस और मादक। कालिदास भी जरूर अनासक्त योगी रहे होंगे। मेघदूत काव्य ऐसे ही कवियों के हृदय से निकलता है।कर्णाट-राज कीप्रिया विज्जिका देवी का कहना है- एक कवि ब्रह्मा थे, दूसरे वाल्मीकि और तीसरे व्यास।एकने वेद, दूसरे ने रामायण और तीसरे ने महाभारत लिखी। इनके अतिरिक्त कोई यदि कवि होने का दावा करता है तो कर्णाट-राजकी पत्नी उसके सिर पर अपनाबाँया चरण रखती है। अगर बनना है तो शिरीष की मस्ती को देखो।

कालिदास महान कवि थे। वे अनासक्ति योगी की स्थिर-प्रज्ञताऔर विदग्ध-प्रेमी का हृदय रखते थे। कालिदास ने एक श्लोक रचा, जिसमें शिरीष का उल्लेख था। दुष्यंत ने शकुंतला का चित्र बनाया,लेकिन रह-रह कर उनका मन खीझ उठता था क्योंकि उन्हें लग रहा थाकि कुछ छूट गया है। बड़ी देर बाद दुष्यंत को समझ आया वो शकुंतला के कान में शिरीष पुष्प देना भूल गए हैं जिसके केसर उस के गालोंको छू रहे हैं और रह गया था शरद के चंद्र की किरणों के समान कोमल सफेद कमल के फूलों का हार। कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर पहुँच जाते थे। दुख हो या सुख, वे अपनाभाव-रस अनासक्त किसान की तरह अच्छी तरह से निचोड़े हुए गन्ने के रसकी तरह निकाल लेते थे। कालिदास की तरह ही अन्य अनासक्त आधुनिक हिंदी कवि हैं- सुमित्रानंदन पंत, रविंद्र नाथ टैगोर आदि।

शिरीष वास्तव में ही अवधूत है। हमारे देश के ऊपर से मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट,खून-खराबे का बवंडर निकल गया है, ऐसे समय में भी स्थिर रहा जा सकता है। हमारे देश का एक बूढ़ा स्थिर रह सका, क्योंकि वो शिरीष की तरह अवधूत था। वो भी वायुमंडल से रस खींचकर अवसर के अनुसार कोमल व कठोर हो सके। शिरीष को देखकर लेखक के हृदय में हूकउठती है -हाय! वह अवधूत आज कहाँ है?

VASUNDHARAHINDI.COM

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

(एक)

ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले। फूल है शिरीष। बसंत के आगमन के साथ लहकउठता है, आषाढ़ तक जो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है। जब उमस में प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है। यद्यपि कवियों की भाँति हर फूल-पत्ते को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है, पर नितांत ठूँठ भी नहीं हूँ।शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोड़ा हिल्लोल जरूर पैदा करते हैं।

प्रश्नक)शिरीष कब से कब तक महकता है?

उत्तर:बसंत के आगमन के साथ महकता है और आषाढ़ तक तो महकता ही है। कभी-कभी भादों के महीने में भी इस पर फूल खिलते हैं।

प्रश्न ख) शिरीष को कालजयी अवधूत क्यों कहा गया है तथा वो क्या मंत्र प्रचार करता है?

उत्तर : शिरीष भीषण गर्मी में फलता-फूलता है,जब लोगों के हृदय लू से सूखते हैं। इसीलिए इसे समय पर विजय प्राप्त करने वाला कहा गया है।शिरीष जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता है।

प्रश्नग)लेखक ने अपनी क्या विशेषता बताई है?

उत्तर:लेखक कवि की तरह प्रकृति के सौंदर्य को देखकर मुग्ध होने वाला हृदय नहीं रखते, पर उनका हृदय ठूँठ भी नहीं है। शिरीष के पुष्प उनके हृदय में हिल्लोल उत्पन्न करते हैं।

प्रश्न घ) "ऐसे दुमदारों सेलँडूरे भले।" लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर:लेखक का कहना है अमलतास, कर्णिकार के वृक्ष पर भी गर्मी में फूल आते हैं, पर केवल दस-पंद्रह दिन के लिए, फिर वे फूलविहीन हो जाते हैं। परंतु शिरीष पर पूरी गर्मी फूल खिलते हैं तथा अपनीजीवन-शक्ति का संदेश देते हैं।

(दो)

मैं शिरीष के फूलों को देख कर कहता हूँ कि क्यों नहींफलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है। सुनता कौन है? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राणकण थोड़ा भीऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं।दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा जाएँगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच सकते हो।जमे कि मरे।

प्रश्न क)शिरीष के फूलों को देखकर लेखक क्या कहता है?

उत्तर:शिरीष के फूल फलते ही क्यों नहीं समझतेकि झड़ना (मुरझाना) निश्चित है।

प्रश्न ख) महाकाल देवता के कोड़ों से कौन मरेगा और कौन बचेगा?

उत्तर:महाकाल देवता के कोड़ों से जीर्ण और दुर्बल मर रहे हैं तथा जो ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्ति के हैं वो बच जाएँगे।

प्रश्न ग) किन के बीच संघर्ष चल रहा है?

उत्तर:जीवन और मृत्यु के बीच लगातार संघर्ष चल रहा है।

प्रश्न घ) मूर्ख लोग क्या समझते हैं?

उत्तर:मूर्ख समझते हैं जहाँहैं वहीं बने रहो, ऐसा करने से काल देवता की आँख से बच जाएँगे।

VASUNDHARAHINDI.COM

(तीन)

कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेद कर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे, दुख हो कि सुख,वे अपना भाव-रस उस अनासक्तकृपीवल की भाँति खींच लेते थेजोनिर्दलितईक्षुदंड से रस निकाल लेता है।कालिदास महान थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सकते थे। कुछ इसी श्रेणी की अनासक्ति आधुनिक हिंदी कवि सुमित्रानंदन पंत में है। कविवर रवींद्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा- राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुंदर क्यों न हो,वह यह नहीं कहता कि हम में आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया। असल गंतव्य स्थानउसे अतिक्रम करने के बाद ही है, यही बताना उसका कर्तव्य है। फूल हो या पेड़, वह अपने आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है, वह इशारा है।

प्रश्न 1) लेखक ने कालिदास को महान क्यों कहा है?

उत्तर:कालिदास इसलिए महान थे क्योंकि वह अनासक्त थे तथा सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर एक किसान की तरह रस निकले हुए ईख में से भी रस निकाल लेते थे अर्थात् भाव रस को निकाल लेते थे।

प्रश्न 2) आधुनिक अनासक्त कवि कौन हैं?

उत्तर :कालिदास की तरह ही आधुनिक अनासक्त कवि सुमित्रानंदन पंत तथा रवीन्द्रनाथ आदि हैं।

प्रश्न 3) रवीन्द्रनाथ ने क्या कहा है?

उत्तर:राजोद्यान का सिंहद्वार कितना हीअभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुंदर क्यों न हो, वह गंतव्य स्थान नहीं, मार्ग उससे आगे भी है अर्थात् एक लक्ष्य से आगे भी अगला लक्ष्य है।

प्रश्न 4)"फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है, वह इशारा है" इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर:किसी फूल या पेड़ को देखकर यह नहीं समझना चाहिए,बस फूल और पेड़ के बाद कुछ नहीं, बल्कि ये इशारा करते हैं कि इसके बाद भी कई परिवर्तन बाकी हैं।

(चार)

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या ये बाह्य परिवर्तन धूप, वर्षा, आँधी,लू अपने आप में सत्य नहीं? हमारे देश के ऊपर से जो वह मार-काट, अग्निदाह,लूट-पाट,खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों? मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है।

प्रश्नक) अनुच्छेद के आधार पर बताइए- शिरीष अवधूत कैसे है?

उत्तर:जैसे सुख हो या दुख, हर कीमत पर अवधूत निर्विकार रहते हैं, वैसे ही शिरीष भी चिलकती धूप में भी सरस रहता है।

प्रश्न ख)अपने-आप में क्या सत्य नहीं है?

उत्तर : बाह्य परिवर्तन सुख-दुख,धूप-वर्षा, आँधी, तूफान,लूआदि अपने आप में सत्य नहीं हैं।

प्रश्नग)हमारे देश के ऊपर से कौन-सा बवंडर गुजरा है?

उत्तर : परतंत्रता के समय मार-काट, अग्निदाह,लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर गुजर गया है।

प्रश्न घ) बूढ़ा किसे कहा गया है तथा क्यों?

उत्तर: बूढ़ा गाँधीजी को कहा गया है।वो शिरीष की तरह अवधूत थे। इसीलिए परतंत्रता के समय उन्होंने अंग्रेजों का विरोध किया और उनके अत्याचारों से देश को स्वतंत्र कराया।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1)लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह क्यों माना है?

अथवा

अवधूत की विशेषताएँ बताते हुए लिखिए कि शिरीष को अवधूत क्यों कहा गया है?

अथवा

लेखक ने शिरीष को अवधूत क्यों कहा है? पाठ के आधार पर कारणों का उल्लेख करो।

उत्तर : अवधूत सुख हो या दु:ख, एक सा रहता है। कष्टों और कठिनाइयों में भी जीवन रस से भरा रहता है, परास्त नहीं होता,कालजयी होता है जैसे कबीर, कालिदास आदि।अर्थात् आज भी उन्हें याद किया जाता है।शिरीषभी अवधूत है, अत्यधिक गर्मी, लू में भी सरस रहता है, फूलों से लदा रहता है।कालजयी की तरह भीषण गर्मी में भी हार नहीं मानता,फलता-फूलता है, इसलिए शिरीष को अवधूत कहना उचित ही है।

प्रश्न 2)"हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है।" पाठ के आधार पर स्पष्ट करो।

उत्तर : हृदय की कोमलता को बचाने के लिए कभी-कभी बाह्य रूप से कठोर दिखना पड़ता है। शिरीष भी कुछ ऐसा ही है। भयंकर गर्मी और लू में भी उसके फूल कठोरता से फलते-फूलते हैं, पर उन फूलों के केसर जैसे कोमल तंतु होते हैं। कबीर, तुलसी, कालिदास आदि कवि प्रवृत्ति से चाहे कठोर थे, पर कोमल व भावुक हृदय रखते थे।

प्रश्न 3) लेखक ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करो।

अथवा

शिरीष आज के संदर्भ में हमें क्या संदेश देता है? स्पष्ट करो।

उत्तर: शिरीष भीषण गर्मी और लू में भी फलता-फूलता है और सरस रहता है तथा हमें संदेश देता है जीवन की विषम परिस्थितियों में अविचल रह कर अपनी जिजीविषु को बनाए रखना चाहिए। जब ऐसा होगा तभी हम विषम परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न 4)"हाय, वह अवधूत आज कहाँ है?" ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?

उत्तर : अवधूत आत्मबल से युक्त होते हैं, परन्तु आजकल लोग देहअर्थात्मोह-माया और भौतिक वस्तुओं के गुलाम हैं। उनका मूल उद्देश्य केवल अपनी सुख-सुविधाओं और सम्बन्धों पर ध्यान देना है। इस कारण हमारी सभ्यता और संस्कृति संकट में है। परन्तु गाँधी जैसे लोग भी हैं, जिन्होंने गुलामी की जंजीरों से हमें मुक्ति दिलाने के लिए अवधूत की तरह ही काम किया।

प्रश्न 5) कवि (साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी की स्थिरप्रज्ञताऔर विदग्ध प्रेमी का हृदय एक साथ आवश्यक है। ऐसा विचार प्रस्तुत कर के लेखक नेसाहित्य-कर्म के लिए बहुत ऊँचा मानदंड निर्धारित किया है। विस्तारपूर्वक समझाइए।

उत्तर: लेखक का मानना है कि कवि (साहित्यकार) अनासक्त योगी और स्थिर प्रज्ञ होना चाहिए तथा उसका हृदय विदग्ध प्रेमी का होना चाहिए। एक बहुत ऊँचा मापदंड है, पर हिंदी साहित्य में ऐसे कवि (साहित्यकार) थे जैसे- वाल्मीकी, कालिदास आदिइसी प्रकार के अनासक्तयोगी थे, अवधूत थे, जिन्होंने केवल अपने हृदय की आवाज को सुना। सदा मर्यादाओं का पालन किया तथा हृदय की मधुरता से युक्त रहे।

प्रश्न 6)सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवीहो सकताहैं, जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनी गतिशीलता बनाए रखी है। पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर : लेखक का कहना है काल की मार से बचकर दीर्घजीवी वही हो सकते हैं जो अपनी जड़ता को छोड़कर समय के अनुसार बदलते रहते हैं और गतिशील रहते हैं। गाँधीजी ऐसे ही थे। परतंत्रता की कठोर परिस्थितियों में वे गतिशील रहे।स्थिर प्रज्ञ की तरह अनुचित का विरोध किया और भारत को स्वतंत्रता दिलाई। वैसे ही जैसे शिरीष के फूल लू, गर्मी में भी फलते फूलते हैं।

प्रश्न7)"दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं,वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा पाएँगे। भोले हैं वे।हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओरमुँहकिए रहो तो कोड़े की मार से बच सकते हो,जमे कि मरे।"स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष चलता रहता है। मूर्ख समझते हैं जहाँहैं वैसे ही रहो तो काल देवता से बच जाओगे। परंतु वो मूर्खहैं। स्थिर रहना, एक स्थान पर टिके रहना जड़ता की निशानी है, मृत्यु के निशानी है। इसीलिए जो समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं, आगे की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति रखते हैं,वे काल देवता से बच सकते हैं अर्थात् गतिशीलता ही जीवन है और जड़ता मृत्यु।

प्रश्न 8)"जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?---- मैं कहता हूँ कि कवि बनना है मेरे दोस्तो,तोफक्कड़ बनो।" आशय स्पष्ट करो।

उत्तर : लेखक का कहना है जो कवि अनासक्त है अर्थात्लाभ-हानि, सुख-दुख का हिसाब नहीं रखता, वही सच्चा कवि है। इसके विपरीत जो कवि इस उद्देश्य से कविता लिखता है कि उसे लाभ मिलेगा, यश मिलेगा,वह कवि हो ही नहीं सकता। अगर सच्चा कवि बनना है, तो फक्कड़बनो, अनासक्त रहो।

प्रश्न 9)"फल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है, इशारा है।" आशय स्पष्ट करो।

उत्तर : कोई फल या पेड़अपने आप में पूर्ण है, ऐसा नहीं है।वह तो हमें संदेश देते हैं कि इसके आगे भी दुनिया है। फल और पेड़ अन्य कई फलों व पेड़ों को जन्म देंगे। संसार का निर्माता महान है,जिसने इतनी सुंदर दुनिया बनाई है, उसे जानना आवश्यक है।

प्रश्न 10)शिरीष के पुष्पको शीत पुष्प भी कहा जाता है।ज्येष्ठ माह की प्रचंड गर्मी में फूलने वाले फूल को शीतपुष्प कीसंज्ञा किस आधार पर दी गई होगी?

उत्तर : शिरीष के पुष्प भीषण गर्मी में खूब फलते-फूलतेहैं, जब सारी सृष्टि गर्मी से त्राहि-त्राहि कर रही होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शिरीष के पुष्प शीतपुष्प हैं। जैसे बर्फ के संपर्क में आने पर आग शाँत हो जाती है, वैसे ही शीतल शिरीष के पुष्पों के संपर्क में आने पर भीषण गर्मी की ऊष्णता समाप्त हो जाती है। इसीलिए येपुष्पफलते-फूलते हैं।

प्रश्न 11) कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गाँधी जी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए?

उत्तर :गाँधी जी बहुत कोमलहृदय थे। देश के लोग गुलामी की जंजीरों में जकड़े हैं, उन पर अत्याचार हो रहे हैं, यह सब देखकर उनका कोमल हृदय दुखी होता था। वही गाँधीजीजब देश की आजादी के लिए, देश के लोगों के अधिकार के लिएअंग्रेजों का विरोध करते थे, तब वे वज्र से भी कठोर हो जाते थे।अर्थात् गाँधीजी में कोमल व कठोर दोनों तरह के भाव थे।

प्रश्न 12)शिरीष, अवधूत और गाँधी एक दूसरे के समान कैसे थे? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : शिरीष, अवधूत और गाँधीजी एक जैसे ही हैं। शिरीषभीषण गर्मी में भी फलता-फूलता है और सरस रहता है। अवधूतभी सुख-दुख में, लाभ-हानि में सरस रहता है। गाँधीजी हिंसक भारत में भी अहिंसक रहे, सरस रहे। हम कह सकते हैं शिरीष, अवधूत और गाँधीजी एक जैसे हैं।

प्रश्न 13) हजारी प्रसाद द्विवेदी के द्वारा नेताओं और कुछ पुराने व्यक्तियों की अधिकार-लिप्सा पर किए गए व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक द्विवेदी जी का कहना है शिरीष के फल अगले फल आने तक वृक्ष पर लगे रहते हैं। नए आने वाले फूल उन्हें जबरदस्ती हटाते हैं। ठीक इसी प्रकार कुछ पुराने नेता और व्यक्ति अपनी कुर्सी/पद को त्यागना नहीं चाहते, जब तक कि नई पीढ़ी उन्हें जबरदस्ती धक्का देकर निकाल नहीं देती।

प्रश्न 14)"हाय, वह अवधूत आज कहाँ है?" लेखक ने किसे स्मरण किया है और क्यों?

उत्तर : यहाँ लेखक ने गाँधीजी को स्मरण किया है। जब देश में खून-खराबा हो रहा था, उस समय गाँधीजी अनासक्त योगी की तरह अनासक्त और रसवान बने रहे। देशवासियों के लिए कोमल व अंग्रेजों के प्रति कठोर रहे। हाय, वह अवधूत आज कहाँ है?

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM